हेनरीटा की अमर कोशिकाएं

आज दुनिया भर में कैंसर अनुसंधान के लिए जिन कोशिकाओं का उपयोग किया जा रहा है, वे एक अनजानी महिला हेनरीटा लैक्स की हैं जो 1951 में करीब 30 वर्ष की उम्र में ग्रीवा कैंसर के कारण चल बसी थीं। ये कोशिकाएं उसी समय डॉक्टर्स ने सुरक्षित रख ली थीं और तब से आज तक इनका उपयोग अनुसंधान में किया जा रहा है। इन कोशिकाओं ने वैज्ञानिक अनुसंधान में नैतिकता सम्बंधी कुछ अहम सवालों को भी जन्म दिया है।

इस मसले पर रेबेका स्क्लूट ने एक पुस्तक लिखकर सवालों को सामने रखने का प्रयास किया है। पुस्तक है *दी इम्मॉर्टल लाइफ ऑफ हेनेरीटा लैक्स* (हेनेरीटा लैक्स का अमर जीवन)। इस पुस्तक को लिखने के लिए स्क्लूट ने हेनेरीटा लैक्स के परिजनों, उसके डॉक्टरों व शोधकर्ताओं से काफी लंबी बातचीत की। हेनेरीटा लैक्स एक गरीब किसान की बेटी थीं। अक्टूबर 1951 में बाल्टीमोर के जॉन्स हॉपकिन्स अस्पताल में उनका निधन हो गया था। लैक्स के पांच बच्चे थे। बाल्टीमोर अस्पताल के डॉक्टरों ने लैक्स के कैंसर की कोशिकाएं निकालकर संरक्षित कर ली थीं मगर यह बात लैक्स अथवा उनके परिजनों को नहीं बताई गई।

लैक्स की कैंसर कोशिकाएं प्रयोगशाला में पोषक माध्यम में रखने पर अच्छी तरह वृद्धि करने लगीं और आज तक करती जा रही हैं। दुनिया भर की प्रयोगशालाएं कैंसर रोधी पदार्थों के परीक्षण वगैरह के लिए इन्हीं कोशिकाओं पर निर्भर हैं। लैक्स या उनके परिजनों को नहीं बताया गया था कि लैक्स की कोशिकाओं का उपयोग अनुसंधान में किया जाएगा। व्यापक वैज्ञानिक समुदाय इस तथ्य से अनभिज्ञ ही रहा। आज ये कोशिकाएं (जिन्हें हेनेरीटा लैक्स के नाम पर HeLa कोशिकाएं कहते हैं) और इनसे प्राप्त अन्य उत्पाद 100 डॉलर से लेकर 10,000 डॉलर तक में उपलब्ध हैं।

दूसरी ओर, स्क्लूट बताती हैं कि इन 50 वर्षों में हेनेरीटा लैक्स का परिवार कंगाली की हालत में जीता रहा। उनके पास स्वास्थ्य बीमा तक नहीं है और उनकी माली हालत काफी खराब है। स्क्लूट ने पाया कि इसे लेकर परिवार में काफी रोष है।

स्क्लूट को यह जानकारी एकत्रित करने के लिए बरसों शोध करना पड़ा है। मगर वे कहीं भी किसी को दोषी नहीं ठहरातीं। उनका तो कहना है कि जाने-अनजाने में यह गलत कदम उठा है जिसमें खलनायक ढूंढने की कोशिश व्यर्थ ही है क्योंकि जिन डॉक्टरों ने ये कोशिकाएं एकत्रित की थीं उन्होंने किसी खराब नीयत से यह काम नहीं किया था। जिन वैज्ञनिकों ने इन कोशिकाओं का उपयोग करके शोध किया है उन्होंने भी बदनीयती से काम नहीं किया है। इसलिए स्क्लूट का मत है कि इस मसले पर आगे की दृष्टि से विचार करने की ज़रूरत है। *(स्रोत फीचर्स)*